

राजीति में आने के बाद वे एक नेता नहीं बल्कि दार्शनिक की तरह रहे। उन्होंने मानवीय आधार पर राजनीति करने की बात कही।

जब तक पंक्ति
में खड़े आखिरी व्यक्ति का
विकास नहीं होता, हमारा
देश विकास नहीं कर
सकता।

मानव मात्र के कल्याण
का मार्ग तभी प्रशस्त हो सकता
है जब उसका सर्वांगीण विकास हो।
मानव तो शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा
का सम्मिलित रूप है। पश्चिम की
उपभोगवादी जीवन शैली भारतीय शैली
से अलग है। भारतीय चिंतन एकात्म
मानव की संतुलित जीवन शैली
को मानता
है।

